संसार की मलिनताओं से दूर भागना

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

2 पतरस 2:20 में लिखा है:

“यदि वे हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की भ्रष्टता से बच निकले, और फिर उसी में फँसकर हार गए, तो
उनकी अंतिम दशा पहली से भी अधिक बुरी हो जाती है।”

यह पद हमें मसीही जीवन के बारे में एक गहरी और गंभीर सच्चाई सिखाता है। यीशु मसीह को जानना केवल दिमागी या बौद्धिक ज्ञान नहीं है, बल्कि यह एक बदले हुए जीवन की माँग करता है—ऐसा जीवन जो संसार के पापों से मुँह मोड़ ले। उद्धार केवल एक बार की घटना नहीं है, बल्कि संसार की भ्रष्टता से अलग किया जाना है, जिसे हम पवित्रीकरण कहते हैं।
यदि कोई विश्वासी फिर से पाप में लौट जाता है और दोबारा उसका दास बन जाता है, तो उसकी आत्मिक दशा उद्धार से पहले की अवस्था से भी अधिक खराब हो जाती है। यह बाइबल में बताए गए धर्मत्याग के सिद्धांत को दर्शाता है—अर्थात परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव करने के बाद पाप की ओर लौटना, जो एक अत्यंत गंभीर चेतावनी है (इब्रानियों 6:4–6)।

संसार की मलिनताएँ क्या हैं?

ये वे पापपूर्ण कार्य और जीवन-शैली हैं जो परमेश्वर के पवित्र मानक के विरुद्ध हैं—जैसे नशाखोरी, व्यभिचार, चोरी, टोना-टोटका, लोभ, गर्भपात, समलैंगिकता और ऐसे अन्य काम (गलातियों 5:19–21)।

संसार की मलिनताओं से दूर भागना

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

फिर से गिर जाने का खतरा

यदि कोई विश्वासी इन पापों में फिर से फँस जाता है और उनसे बाहर नहीं निकल पाता, तो उसका नुकसान पहले से कहीं अधिक होता है। यह उस बीमारी के समान है, जो समय पर इलाज न मिलने पर और भी गंभीर हो जाती है।
उदाहरण के लिए, जो व्यक्ति कभी नशे की लत में था और उससे मुक्त हो गया, वह यदि दोबारा गिरता है तो वह लत पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली हो सकती है (रोमियों 6:12–14)। इससे यह स्पष्ट होता है कि जब हम पाप को बार-बार स्थान देते हैं, तो उसकी पकड़ और मजबूत होती जाती है।

फिलिप्पियों 2:12 हमें स्मरण दिलाता है:

“इसलिए, हे मेरे प्रिय लोगो, जैसे तुम सदा आज्ञाकारी रहे हो, वैसे
ही अब भी—न केवल मेरी उपस्थिति में, पर मेरी अनुपस्थिति में
भी—डरते और काँपते हुए अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ।”

इसका अर्थ यह है कि उद्धार केवल अतीत में घटी हुई बात नहीं है, बल्कि यह आज्ञाकारिता और परमेश्वर पर निर्भरता के साथ चलने की एक निरंतर प्रक्रिया है।

यीशु की चेतावनी का उदाहरण

संसार की मलिनताओं से दूर भागना

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

यीशु ने उस मनुष्य का उदाहरण दिया जिसमें से दुष्ट आत्मा निकल गई थी, लेकिन उसने अपने जीवन को परमेश्वर की उपस्थिति से नहीं भरा। परिणामस्वरूप वह दुष्ट आत्मा सात और दुष्ट आत्माओं को साथ लेकर लौट आई, और उस मनुष्य की दशा पहले से भी अधिक बुरी हो गई (मत्ती 12:43–45)। जो आत्मा छुटकारा पाने के बाद भी परमेश्वर को स्थान नहीं देती, वह बुराई के लिए और अधिक खुली हो जाती है।

यदि आप फिर से गिर जाएँ तो क्या करें?

तुरंत मन फिराएँ! अनुग्रह का द्वार अभी खुला है, लेकिन यदि कोई व्यक्ति जान-बूझकर पाप में बना रहता है, तो वह द्वार बंद हो सकता है। बाइबल हमें बुलाती है कि हम शैतान का विरोध करें और परमेश्वर के निकट जाएँ (याकूब 4:7–8)।
यदि आप नशाखोरी, व्यभिचार, लोभ या अशुद्धता जैसे पापों में लौट आए हैं, तो उन प्रलोभनों से तुरंत भागिए।

यीशु हमें पवित्र जीवन के लिए बुलाते हैं—
“पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।” (1 पतरस 1:16)

पवित्र जीवन का अर्थ है आज्ञाकारिता में चलना और निरंतर मन फिराते रहना।

उद्धार एक अनमोल वरदान है, जो एक ही बार दिया गया है (इब्रानियों

संसार की मलिनताओं से दूर भागना

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

9:27–28)। इसलिए हमें इसे हल्के में नहीं लेना चाहिए, बल्कि परमेश्वर के भय और आदर में जीवन बिताना चाहिए। जब हम सच्चे मन से पश्चाताप करते हैं और पूरी तरह मसीह का अनुसरण करने का निर्णय लेते हैं, तो परमेश्वर दया करता है और हमें फिर से स्थापित करता है (1 यूहन्ना 1:9)।

प्रभु आपको आशीष दे कि आप इस संसार की मलिनताओं से दूर भागें और पूरे मन से उसके लिए जीवन जिएँ!

Share on:
WhatsApp